



# द शह व क्य व उत ञकु । ढरकु

## समाचार पत्र

अंक 50

अक्टूबर-दिसम्बर, 2012

### डा. एन.के. कृष्णा कुमार : हमारे नए उप महानिदेशक (बागवानी)



केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान के निदेशक और समस्त कर्मचारी अपने नए उप महानिदेशक (बागवानी) डा. एन.के. कृष्णा कुमार के पदभार संभालने पर हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। एम.एससी (कृषि), पीएच.डी (यू.एस.ए.) व पोस्ट डॉक्टरल (यू.एस.ए.) की उपाधियों से अलंकृत आप देश के विख्यात कीट विज्ञानी हैं। अपने 34 वर्ष के अनुसंधान अनुभव के दौरान आपके राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जर्नलों में 120 से भी अधिक रिसर्च पेपर प्रकाशित हो चुके हैं। आपको ईस्ट-वेस्ट सेंटर अवार्ड, अवार्ड ऑफ मेरिट, गामा सिग्मा डेल्टा पेंसिल्वेनिया ब्रांच एवं आई.सी.ए.आर. फेलोशिप जैसे राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय अवार्ड से भी अलंकृत किया जा चुका है। इससे पहले आप राष्ट्रीय कृषि प्रमुख कीट ब्यूरो, बंगलुरु के निदेशक भी रह चुके हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि डा. कुमार के कुशल नेतृत्व में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् का बागवानी संभाग हर क्षेत्र में दिन दगुनी रात चौगुनी प्रगति करेगा।

### अनुसंधान उपलब्धियां

#### भारतीय मैदानों के लिए नई पोषक प्रभावी आलू की किस्म कुफरी गौरव

कुफरी गौरव अधिक उपजशील मध्यम समय में तैयार होने और पिछेता झुलसा की मध्यम प्रतिरोधी सफेद कन्दों युक्त किस्म है। यह उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। फसल मानक, नोटिफिकेशन एण्ड रीलीज ऑफ वैराइटी, कृषि मंत्रालय भारत सरकार की केन्द्रीय उपसमिति ने अपने 4 अक्टूबर, 2012 की अधिसूचना सं. 2363(ई.) द्वारा इसे उत्तरी गंगावर्ती मैदानों में खेती के लिए जारी किया है। अगती मध्यम (75 दिनों) व मध्यम (90 दिनों) दोनों ही अवधियों में सभी स्थानों पर कुफरी गौरव की अधिकतम उपज प्राप्त होती है। हरियाणा, पंजाब, उत्तराखण्ड व पश्चिम उत्तर प्रदेश इसकी खेती के लिए उपयुक्त क्षेत्र है। वर्ष 1999-2003 के दौरान विभिन्न स्थानों पर किए गए परीक्षणों में इस किस्म द्वारा कन्ट्रोल की अपेक्षा 75 दिनों में बेहतर उपज प्राप्त हुई। उत्तर भारत के विभिन्न मैदानी क्षेत्रों में सर्वश्रेष्ठ कन्ट्रोल कुफरी अशोक की अपेक्षा इसकी कुल उपज में 7.3 से 14.3 प्रतिशत तथा वाणिज्य उपज में 7.5 से 14.8 प्रतिशत बढ़ौतरी दर्ज की गई। सर्वश्रेष्ठ कन्ट्रोल कुफरी पुखराज की अपेक्षा कुफरी गौरव की 90 दिनों में बेहतर उपज रही तथा इसकी वाणिज्य उपज में कुल 2.3 से 15.2 प्रतिशत बढ़ौतरी दर्ज की गई। हाल ही में



कुफरी गौरव किस्म के कन्द

(2010-2011) उत्तर भारत के विभिन्न मैदानी क्षेत्रों में किए गए परीक्षणों में (75 व 90 दिनों) कुफरी गौरव किस्म की क्रमशः 8.1 प्रतिशत और 13.0 प्रतिशत अधिक वाणिज्य उपज प्राप्त हुई। इस किस्म की विशेषता रही कि उत्तर भारत के मैदानी इलाकों में विभिन्न वर्षों के दौरान सर्वश्रेष्ठ नियंत्रित कुफरी पुखराज/कुफरी पुष्कर की अपेक्षा इस किस्म पर नाइट्रोजन की संस्तुत मात्रा का 9.7 से 21.2 प्रतिशत अधिक प्रभाव रहा। फास्फोरस के मामले में भी कुफरी गौरव किस्म ने 11.7 से 19.2 प्रतिशत अधिक प्रभावी उपयोग प्रदर्शित किया। इसी प्रकार विभिन्न वर्षों के दौरान सर्वश्रेष्ठ नियंत्रित किस्म कुफरी पुखराज/कुफरी पुष्कर की अपेक्षा कुफरी गौरव किस्म पर पोटाश का 15.8 से 19.9 प्रतिशत तक अधिक प्रभाव रहा। कुफरी ज्योति जैसी अन्य नियंत्रित किस्मों की अपेक्षा पोषक (नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश) प्रतिबल परिस्थितियों के अधीन कुफरी गौरव का निष्पादन बेहतर रहा। इसके साथ नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की उच्च मात्रा डालने पर कुफरी गौरव किस्म से सफेद आकर्षक अण्डाकार कन्द प्राप्त होते हैं। इसका गूदा क्रीमी, आसानी से पकने वाला तथा मोम जैसी संरचना युक्त है। मध्यम समय में तैयार होने वाली यह किस्म कुफरी पुखराज व कुफरी पुष्कर किस्मों का एक अच्छा विकल्प हो सकता है। देश के निर्धन किसान नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश का कम से कम उपयोग करके इस किस्म से अन्य किस्मों के बराबर उपज ले सकते हैं।

राज कुमार, जी.एस. कंग एवं एस.पी. त्रेहन

#### आलू कन्दों में जिंक की कमी

किसी भी स्थाई खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य पौष्टिक संतुलित भोजन उपलब्ध करवाना है। अध्ययनों से पता चलता है कि भारत सहित विश्व भर की कुल मानव जनसंख्या के आधे से भी अधिक लोगों में सूक्ष्म तत्वों की कमी बनी रहती है। उपलब्ध आंकड़े बताते हैं कि एक वयस्क मानव शरीर में लगभग 2-3 ग्राम जिंक होता है जिसमें से प्रतिदिन लगभग 0.1 प्रतिशत मात्रा की पुनः पूर्ति होती है। मॉलिकूलर फिजियोलॉजी में हाल में किए अध्ययन से पता चला कि जैसे तो मानव शरीर में पूरी तरह से लौह की कमी नहीं होती लेकिन यह कमी कुछ हद तक जिंक की कमी के कारण हो सकती है। सदियों से भारतीय भोजन में सब्जियों के रूप में आलू का महत्वपूर्ण स्थान रहा है तथा यह निर्धन व धनी दोनों ही वर्गों के भोजन का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। जिंक की कमी को देखते हुए मोदीपुरम में 2006 से आलू कन्दों में लम्बे समय तक जिंक तत्वों के लिए विभिन्न उपचार किए गए। वर्ष 2010-11 में आलू-गेहूँ-धान, आलू-प्याज-मक्का और आलू-मूंग-तिल जैसे तीन फसल चक्रों में विभिन्न उपचार किए गए।

इससे प्राप्त परिणामों के अनुसार दिए गए तत्वों के विकल्प (अकार्बनिक, कार्बनिक, एकीकृत) को छोड़कर और आलू पर जिंक 25 किलो ZnSO<sub>4</sub>/हेक्टेयर की दर से अतिरिक्त उपचार कन्दों में परिशुद्ध कन्ट्रोल, जिंक तत्व लेश मात्र पाए गए। विशुद्ध, कन्ट्रोल में 2006 में आरम्भ किए गए प्रयोगों में शुरू से ही आलू आधारित सभी तीन फसल प्रणालियों में जिंक सहित किसी भी पोषक तत्व का उपचार नहीं किया। इससे पता चलता

#### इस अंक में

अनुसंधान उपलब्धियां	1
प्रशिक्षण एवं तकनीकी हस्तान्तरण	2
महत्वपूर्ण बैठकें व आगन्तुक	3
मानव संसाधन	4
निदेशक की कलम से	4

हे कि आलू की फसल में जिक डालने के बावजूद आलू कन्दों में जिक का स्थानान्तरण नहीं होता। परिणामों का पता लगाने के लिए मोदीपुरम में पैदा की गई तैतालीस किस्मों तथा जालन्धर में पैदा की गई अठारह किस्मों के कन्दों के स्टार्च के नमूनों का मूल्यांकन किया गया। लेकिन इसके परिणाम एक जैसे ही पाए गए। इसके बाद विभिन्न कृषि परिस्थितियों (ए.आई.सी.आर.पी. के 15 केन्द्रों) में पैदा किए गए कन्दों का भी मूल्यांकन किया गया। इनमें से केवल भुवनेश्वर, पुणे, पासीघाट, रायपुर व छिदवाड़ा केन्द्रों के कन्दों में जिक की उपस्थिति पाई गई। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इनमें से अधिकांश केन्द्र गैर-पारम्परिक आलू उत्पादन क्षेत्र हैं और देश के कुल आलू उत्पादन का बहुत थोड़ा हिस्सा यहां पैदा किया जाता है। लेकिन यहां के आलू कन्दों में जिक की उपस्थिति इस बात को सुनिश्चित करती है कि जिक से परिपूर्ण आलू कन्द पैदा करना संभव है। आलू कन्दों में खनिज तत्वों की उपस्थिति वातावरणीय व आनुवंशिकी कारकों से प्रभावित होती है। देश के प्रमुख आलू उत्पादन क्षेत्रों में कन्दों में जिक के स्थानान्तरण व इसके कारणों का पता लगाने के लिए आधुनिक मॉलिक्यूलर आनुवंशिकी उपायों का अध्ययन किया जा रहा है।

**एन.सी.उपाध्याय, बी.पी.सिंह, एस.के. कौशिक, एम.ए.खान, आर.इ.जे.किल, नेम सिंह एवं महेश कुमार**

#### थालावड़ी, इरोड़ (जिला), तमिलनाडू में आलू की किस्मों का मूल्यांकन

तमिलनाडू के इरोड़ जिले के थालावड़ी तालुक (समुद्र तल से 1050 मी. ऊंचे) के गरमालम व कनाकराई गांवों में आलू की कुफरी बादशाह, कुफरी सूर्या, कुफरी ज्योति और कुफरी पुखराज किस्मों का मूल्यांकन किया गया। जालन्धर केन्द्र से प्राप्त आलू बीज, कतार परीक्षणों में प्रति कतार 50 कन्द के हिसाब से लगाए गए। यह परीक्षण 16.8.2012 को लगाया गया व केन्द्र द्वारा संस्तुत उर्वरकों का उपचार किया गया। परिणामों में कुफरी सूर्या की अधिकतम उपज (11.5 टन/हेक्टेयर) हुई इसके बाद कुफरी बादशाह (9.3 टन/हेक्टेयर), कुफरी ज्योति (3.8 टन/हेक्टेयर) व कुफरी पुखराज (0.3 टन/हेक्टेयर) का स्थान रहा।

किस्में	कन्दभार(कि.ग्रा.)**			
	<20 ग्रा.	20-80 ग्रा.	>80 ग्रा.	कुल
कुफरी बादशाह	1.3 (2.2)	3.7 (6.2)	0.6 (1.0)	5.6 (9.3)
कुफरी सूर्या	0.8 (1.3)	4.1 (6.8)	2 (3.3)	6.9 (11.5)
कुफरी ज्योति	0.5 (0.8)	1 (1.7)	0.8 (1.3)	2.3 (3.8)
कुफरी पुखराज	0.1 (0.2)	0.1 (0.2)	0 (0.0)	0.2 (0.3)

\*\*यह आंकड़े टन/हेक्टेयर, कन्द भार दर्शाते हैं।

वैसे बढ़वार अवस्था में लगातार कुफरी बादशाह का निष्पादन अच्छा रहा तथा खोदे गए कन्दों में किसी प्रकार की मुरझान नहीं देखी गई।

**जी.रविचन्द्रन, आर. उमा महेश्वरी, के. मनोरमा, आर. मुथुराज, टी.ए.जोसफ एवं बी.पी.सिंह**

#### प्रशिक्षण एवं प्रौद्योगिकी

##### शिमला में किसान प्रशिक्षण

संस्थान में 10-11 अक्टूबर, 2012 को 'क्वालिटी बीज एवं भोज्य आलू की आधुनिक तकनीकी' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले के 20 किसानों को आलू की किस्में, बीजाई के तरीके, बीमारियां व नाशीजीव प्रबन्धन, एकीकृत पोषक प्रबन्धन, आलू का विधायन एवं भण्डारण आदि की जानकारी दी गई। इन किसानों को मौके पर बीज आलू उत्पादन की जानकारी देने के उद्देश्य से संस्थान के कुफरी-फागू स्थित केन्द्र का दौरा भी करवाया गया।

##### शिमला में कृषि/बागवानी अधिकारियों के लिए मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

संस्थान में 30 नवम्बर से 7 दिसम्बर, 2012 के दौरान 'क्वालिटी बीज आलू उत्पादन एवं प्रमाणीकरण प्रौद्योगिकी' विषय पर आठ दिवसीय मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, असम, मणीपुर व



सी.पी.आर.आई. में मॉडल प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

त्रिपुरा के 13 कृषि एवं बागवानी अधिकारियों ने भाग लिया। प्रशिक्षणार्थियों को उच्च स्तरीय अध्ययन का अनुभव देने के उद्देश्य से प्रशिक्षण में व्याख्यान-सह-परिचर्चा, प्रयोगात्मक सत्र, उद्यम कौशल प्रदर्शन, खेत भ्रमण और वीडियो फिल्म प्रदर्शन जैसे सत्रों को शामिल किया गया।

##### टी.एस.पी. के अधीन लाहौल-स्पिति में जागरूकता शिविर

संस्थान द्वारा जनजातीय उप-क्षेत्र परियोजना (टी.एस.पी.) के अधीन हिमाचल प्रदेश के लाहौल-स्पिति जिले के उदयपुर में 31 अक्टूबर, 2012 को 'क्वालिटी बीज एवं भोज्य आलू की आधुनिक तकनीकी' विषय पर जागरूकता शिविर-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में इस क्षेत्र के 150 से भी अधिक पुरुष व महिलाओं की भागीदारी रही। संस्थान के अनुभवी वैज्ञानिकों ने इन्हें आलू बीजाई के तरीके, उर्वरकों का प्रबन्धन, पौध संरक्षण उपाय और फसलोत्तर प्रबन्धन आदि की जानकारी दी। कार्यक्रम में उपस्थित जन समूह को निःशुल्क प्रसार बुलेटिन भी वितरित किए गए। टी.एस.पी. के अधीन भविष्य की योजनाओं व प्रदर्शनों पर भी निर्णय लिया गया।



आलू पर प्रशिक्षण.सह.जागरूकता शिविर

##### मिनी मिशन-1 के अन्तर्गत किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिमाचल प्रदेश में आलू आधारित फसल प्रणाली में किसानों का उद्यम कौशल पर प्रशिक्षण परियोजना मिनी मिशन-1 के अन्तर्गत संस्थान में अक्टूबर-दिसम्बर, 2012 के दौरान आलू उत्पादकों के लिए ऑन-कैम्पस व ऑन-फार्म प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें शिमला, सोलन व मण्डी जिले के कुल 61 आलू उत्पादकों को आलू व अन्य सब्जियों की सुधरी खेती का प्रशिक्षण दिया। यह प्रशिक्षण इन जिलों के गैर-सरकारी संगठनों के सहयोग से आयोजित किए गए।

##### जालन्धर में किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान के जालन्धर केन्द्र में किसानों के लिए 11 दिसम्बर, 2012 को 'आलू बीज उत्पादन' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 350 से भी अधिक किसानों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री गुरप्रताप सिंह वडाला, विधायक ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने संस्थान द्वारा किए जा रहे शोध कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर किसानों को प्रजनित बीज उत्पादन, आलू में उर्वरकों का प्रबन्धन, आलू पर लगने वाली बीमारियों व नाशीजीवों का प्रबन्धन, आलू की उन्नत किस्में तथा बीज आलू की गुणवत्ता सुधारने के लिए विजातीय पौधों की निकासी जैसे विषयों पर महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। किसानों को इस केन्द्र के खेतों का भी दौरा कराया गया। कार्यक्रम में पंजाबी में प्रकाशित 'आलू बीज उत्पादन दीयां तकनीकी' नामक पुस्तिका का विमोचन भी



जालन्धर में किसान प्रशिक्षण

किया गया। इस अवसर पर किसानों के फायदे के लिए ट्रैक्टर व फार्म उपकरणों, जीवनाशकों एवं उर्वरकों आदि की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। संस्थान के स्टॉल में आलू का यंत्रीकरण, किस्में, बीमारियां व उनकी रोकथाम, पुस्तकें व तकनीकी बुलेटिन आदि प्रदर्शित किए गए।

#### ऊटी में बागवानी अधिकारियों का प्रशिक्षण

संस्थान के ऊटी केन्द्र में 'आलू खेती की प्रौद्योगिकी' पर 12.10.2012 को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बागवानी विभाग, उदागामण्डलम के 25 बागवानी अधिकारियों एवं कृषि विपणन मण्डल के 10 कृषि अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर श्री निवासा रेड्डी, आई.एफ.एस.



के.आ.अ.के., ऊटी में प्रशिक्षण कार्यक्रम

परियोजना निदेशक (एच.ए.डी.पी.), नीलगिरि बतौर मुख्य अतिथि और श्री जी. मोहन, संयुक्त निदेशक (बागवानी) एवं डा. जगदीश कुमार, अध्यक्ष, भा.कृ.अ.सं. क्षेत्रीय केन्द्र, वैलिंगटन ने प्रशिक्षणार्थियों को विशेष रूप से संबोधित किया। केन्द्र के वैज्ञानिकों ने आलू की किस्में, आलू उत्पादन की नवीन प्रौद्योगिकी, बीमारियां एवं नाशीजीवों का प्रबन्धन, बीज आलू की उत्पादन विषयों पर व्याख्यान दिए। खेतों में प्रायोगिक प्रदर्शनों के साथ-साथ उन्हें ट्रैक्टर चालित सेमी ऑटोमेटिक प्लांटर एवं हार्वेस्टर की भी जानकारी दी गई।

#### महत्वपूर्ण बैठकें व आगन्तुक

##### संसदीय राजभाषा समिति का ऊटी दौरा

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति ने 6 अक्टूबर, 2012 को संस्थान के ऊटी केन्द्र में हिन्दी में हो रहे कार्यों का जायजा लिया। केन्द्र के अध्यक्ष डा. टी.ए.जोसफ ने माननीय सदस्यों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें केन्द्र में हिन्दी में किए जा रहे कार्यों के साथ-साथ भविष्य की योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर परिषद् के बागवानी संभाग के प्रधान वैज्ञानिक डा. एस.के. मल्होत्रा, उप निदेशक (राजभाषा) श्री सुरेन्द्र प्रसाद उनियाल, संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री प्रवीन चांदला सहित केन्द्र के वैज्ञानिकों ने समीक्षा बैठक में भाग लिया।



संसदीय राजभाषा समिति का ऊटी दौरा

#### जालन्धर में स्टेक होल्डर की बैठक

संस्थान के जालन्धर स्थित केन्द्र में 10 दिसम्बर, 2012 को आलू अनुसंधान एवं विकास पर संस्थान के निदेशक डा. बीर पाल सिंह की अध्यक्षता में स्टेक होल्डरों की बैठक का आयोजन किया गया। इसमें सिंजेटा इण्डिया प्रा.लि., पुणे, टेकनिकों, चण्डीगढ़, हल्दीराम स्नेक्स प्रा.लि., नोएडा, सतनाम एग्रीकल्चर प्रॉडक्ट्स, जालन्धर, ट्रान्सजेनिक बायोप्लांट्स प्रा.लि., रोपड़, कोल्ड स्टोर के मालिकों, कृषि उपकरण निर्माताओं, राष्ट्रीय बीज निगम, जालन्धर के क्षेत्रीय प्रबन्धक, जालन्धर पोटेटो ग्रोवर्स एसोसिएशन, पोसकॉन निगम, जालन्धर की कार्यकारिणी के सदस्यों सहित संस्थान के मोदीपुरम एवं जालन्धर केन्द्रों के वैज्ञानिकों एवं प्रगतिशील किसानों को मिलाकर कुल 49 लोगों की भागीदारी रही। इसमें हार्लम कटर, कम्बाइन हार्वेस्टर जैसी मशीनों एवं आलू की नवीन उन्नत किस्मों में सुधार लाने के साथ-साथ आलू प्रजनन, आलू की खपत बढ़ाने, प्रमाणित बीज उत्पादन में प्रगतिशील किसानों को शामिल करने आदि पर चर्चा की गई। आलू की नवीन किस्मों को प्रचलित करने के लिए कम्पनियों/प्रगतिशील किसानों एवं वैज्ञानिकों की 14 सदस्यीय कमेटी का गठन भी किया गया।



जालन्धर में स्टेक होल्डर की बैठक

#### राजभाषा समारोह एवं पुरस्कार वितरण

संस्थान के मुख्यालय में हिन्दी चेतना मास के उपलक्ष्य में हिन्दी कार्यशाला के साथ-साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें संस्थान के हर वर्ग के कर्मचारियों की भागीदारी रही। राजभाषा समारोह एवं पुरस्कार वितरण 28 दिसम्बर, 2012 को आयोजित किया गया जिसमें निबन्ध, शब्द ज्ञान, स्मरण शक्ति, चित्र कहानी, प्रश्नमंच एवं हिन्दी टाइपिंग के विजेताओं को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक, डा. बीर पाल सिंह ने कर्मचारियों का आह्वान किया कि संस्थान में हिन्दी पत्राचार बढ़ाने पर विशेष बल दिया जाए। इससे पहले संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री प्रवीन चांदला ने कार्यक्रम की संक्षिप्त जानकारी देते हुए भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं उसके अनुपालन को सुदृढ़ बनाने का अनुरोध किया।

#### लाइव फोन-इन कार्यक्रम

अक्टूबर-दिसम्बर, 2012 के दौरान संस्थान के वैज्ञानिकों ने दूरदर्शन, शिमला से प्रसारित लाइव फोन-इन कार्यक्रमों में भाग लिया:

माह	विषय	विशेषज्ञ का नाम
अक्टूबर	आलू के फसलोत्तर कार्य एवं विपणन	डा. नरेन्द्र कुमार पाण्डेय डा. राजेश कुमार राणा
नवम्बर	निचली पहाड़ियों में आलू की बीजाई और उर्वरकों का उपचार	डा. विजय कुमार दुआ डा. मुकेश कुमार जाटव
दिसम्बर	हि.प्र. में आलू की खेती एवं बीमारियों का प्रबन्धन	डा. नरेन्द्र कुमार पाण्डेय डा. रविन्द्र कुमार डा. वीरेन्द्र कुमार चांदला

## मानव संसाधन

### पदोन्नतियां

नाम	पद	दिनांक
<b>वैज्ञानिक</b>		
डा. सुरेन्द्र कुमार कौशिक, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	01.01.2009
डा. राज कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक		
डा. एस.के. लुथरा, वरिष्ठ वैज्ञानिक		
डा. अनुज भटनागर, वरिष्ठ वैज्ञानिक		
डा. विजय कुमार दुआ, वरिष्ठ वैज्ञानिक		
डा. राजेश कुमार राणा, वरिष्ठ वैज्ञानिक		
डा. मनोज कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	17.03.2009
डा. ब्रजेश सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	20.02.2010
डा. विनय सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	11.05.2010
डा. ध्रुव कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	20.05.2011
डा. संजय रावल, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	12.09.2011
डा. सिद्धार्थ कुमार सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक	प्रधान वैज्ञानिक	24.12.2011
<b>तकनीकी</b>		
33.33 प्रतिशत विभागीय कोटे के तहत श्री ब्रिजेन्द्र सिंहए श्री पवन कुमारए श्री तारा चन्दए श्री सीता रामए श्री सतपाल सिंहए श्री प्रवेश कुमारए श्री लायक राम एवं श्री सुरेन्द्र कुमार कुशल सहायी कर्मियों को विभिन्न तिथियों में पदोन्नत किया गया।		
<b>प्रशासनिक</b>		
एम.ए.सी.पी. स्कीम के अन्तर्गत विभिन्न तिथियों में श्रीमती बिन्द्रा गुप्ताए सहायकए प्रवर श्रेणी लिपिक के पदों पर कार्यरत श्रीमती एमण्णणीए श्रीमती उर्मिला वर्माए श्रीमती सुनिता ठाकुरए एवं श्री ओम प्रकाश को अपग्रेडेशन दिया गया।		
<b>स्थायी कर्मचारी</b>		
एम.ए.सी.पी. स्कीम के अन्तर्गत विभिन्न तिथियों में श्री शत्रुघ्न प्रसाद, श्रीमती सोनू देवी, श्री कुलवन्त सिंह, कु. निरंजन कौर, श्रीमती कमला देवी, श्री राम सरूप, श्री जोगिन्द्र पाल, श्री आनंत राम एवं श्री नन्द लाल को अपग्रेडेशन दिया गया।		

### स्थानान्तरण

नाम	कहां से	कहां
<b>वैज्ञानिक</b>		
डा. ई.पी. वेंकटसलम, वैज्ञानिक	के.आ.अ.सं., शिमला	आई.ए.आर.आई., वैलिंगटन सेंटर, ऊटी
डा. आर. मुथुराज, वरिष्ठ वैज्ञानिक	के.आ.अ.के., ऊटी	के.आ.अ.सं., शिमला
<b>तकनीकी</b>		
श्री उदयवीर सिंह (टी-4)	के.आ.अ.के., जालन्धर	के.आ.अ.सं.परिसर, मोदीपुरम

श्री अनिल कुमार चन्देल (टी-2) <b>प्रशासनिक</b>	के.आ.अ.के., पटना	के.आ.अ.के., जालन्धर
श्री गिरीश ठाकुर, स्टेनोग्राफर ग्रेड-III	के.आ.अ.के., ग्वालियर	के.आ.अ.सं., शिमला

### सेवानिवृत्तियां

नाम	पदनाम	सेवानिवृत्त
<b>वैज्ञानिक</b>		
श्री रामबीर सिंह	प्रधान वैज्ञानिक, के.आ.अ.सं.परिसर, मोदीपुरम	31.10.2012
डा. टी.ए.जोसफ	प्रधान वैज्ञानिक, के.आ.अ.के., ऊटी	31.12.2012
<b>तकनीकी</b>		
श्री आत्मा राम	टी-2, के.आ.अ.के., कुफरी	31.10.2012
श्री राम नाथ विश्वकर्मा	टी-3 (ट्रैक्टर ड्राइवर) के.आ.अ.के., पटना	31.10.2012
<b>प्रशासनिक</b>		
श्रीमती निर्मल रानी	प्रवर श्रेणी लिपिक, के.आ.अ.के., जालन्धर	31.10.2012

### विदेश यात्राएं

डा. शशी रावत ने 1-8 नवम्बर, 2012 के दौरान एशिया पेसीफिक सपोर्ट सेंटर, शंघाई, चीन में आयोजित 'डी.एन.ए. सीक्वेंसिंग' पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।



संस्थान की वैज्ञानिक डा.(सुश्री) जीवलथा ने 1-8 नवम्बर, 2012 के दौरान एशिया पेसीफिक सपोर्ट सेंटर, शंघाई, चीन में 'माइक्रो-अर्थ सिस्टम' पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।



संस्थान के निदेशक डा. बीर पाल सिंह ने 19-23 नवम्बर, 2012 के दौरान, अन्तर्राष्ट्रीय आलू केन्द्र, लीमा, पेरू में आयोजित सिप के बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज़ की बैठक में भाग लिया।



संस्थान के निदेशक डा. बीर पाल सिंह ने 28-29 नवम्बर, 2012 के दौरान ढाका, बंगलादेश में 'बायोटेक्नोलॉजी फॉर फूड सिक्योरिटी एण्ड फार्मर प्रॉस्पेरिटी' की कार्यशाला में भाग लेने के साथ-साथ ए.बी.एस.पी.-II पोटेटो पार्टनर मीटिंग में भाग लिया।



उनके साथ इस आयोजन में संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. संजीव शर्मा एवं वैज्ञानिक डा. एस. सुन्देशा की भी भागीदारी रही।

### निदेशक की कलम से

विश्व की प्रमुख खाद्य फसलों में मक्का, गेहूं एवं चावल के बाद आलू का महत्वपूर्ण स्थान है। आलू में प्रचुर मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन एवं खनिज पाए जाते हैं। आलू के प्रोटीन से मानव आहार के लिए आवश्यक सभी एमीनो अम्ल प्राप्त होते हैं। इसके साथ ही आलू से 10 प्रतिशत से भी अधिक दैनिक मूल्य के फोलेट, मैंगनीज, मैग्नीशियम व फास्फोरस और 20 प्रतिशत से भी अधिक दैनिक मूल्य के पोटेसियम, विटामिन सी और विटामिन बी-6 प्राप्त होते हैं। आलू कन्दों में पौध पोषक तत्व तो अधिक होते हैं किन्तु जिंक व आयरन तत्वों की मात्रा थोड़ी कम होती है। देश के सभी इलाकों में आलू की खेती की जाती है और इसकी खपत भी काफी है। वैसे भी वैश्विक स्वास्थ्य का प्रमुख लक्ष्य विश्व की बड़ी आबादी को पोषक तत्व उपलब्ध करवाना है। इसके लिए समझदारी यही है कि अधिक खपत वाली एवं भविष्य की प्रमुख खाद्य फसल 'आलू' में पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ाई जाए। बारहवीं योजना में पोषक समृद्ध (जिंक एवं आयरन युक्त) आलू कन्द विकसित करने का प्रस्ताव है।

संकलन: ब्रजेश सिंह, संजीव शर्मा, एस सुन्दरेशा व प्रवीन चांदला  
प्रकाशक: निदेशक, केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला-171001, हि.प्र.  
सहयोग: अवनीश कु. अत्रेय, सचिन कंवर व सुरेश कुमार

दूरभाष: 0177-2625073, फ़ैक्स: 0177-2624460, ई.मेल: directorcpri@gmail.com, वेबसाइट: cpri.ernet.in  
मुद्रक : आजाद ऑफ़सेट प्रिंटर्स, प्रा. लि., 144, प्रैस साईट, इंडस्ट्रीयल एरिया-1, चण्डीगढ़, दूरभाष : 0172-2021253-54, 4611489